International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 16-02-2019; Accepted: 20-03-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 3; May 2019; Page No. 16-17

मूर्तिकला में गौतम बुद्ध

डॉ० सन्तोष कुमार शुक्ल
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

छठीं शताब्दी ईसा पूर्व धार्मिक परिवर्तन का युग था जिसके पीछे तत्कालीन आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ उत्तरदायी थीं। वैदिक धर्म में व्याप्त हिंसा, अंधविश्वास एव ंकर्मकाण्डों ने अहिंसावादी बौद्ध धर्म को प्रमुखता प्राप्त करने में सहयोग प्रदान किया। शासकों के अनुग्रह और धार्मिक वर्ग के समर्थन के फलस्वरूप बौद्धसंघ की समृद्धि उत्तरोत्तर बढती गयी। ईसा पूर्व पहली शती तक हीनयान की प्रधानता भारत में बढ़ती रही और इससे सम्बन्धित कला में बुद्ध के जीवन की घटनाओं को प्रतीक रूप में प्रदर्शित किया गया। कुषाण नरेश कनिष्क के समय बौद्ध मत की नई शाखा महायान की उत्पत्ति हुई, और अगले छः सौ वर्षो तक महायान सम्प्रदाय का भारत में प्रचुर–प्रचार होता रहा। बुद्ध के मानवीय रूप को भुलाकर उनके देवी रूपी कल्पना की गयी और पूजा के निमित्त प्रतिमाओं का निर्माण किया जाने लगा। मूर्तियों के अध्ययन की दृष्टि से न केवल बौद्ध मूर्तियों के पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुये, अपितु साहित्यिक साक्ष्यों में भी बुद्ध के मूर्ति का प्रसंग है। दिव्यावदान – कुणालावदान[36] में बुद्ध की मानुषीय काय – परिमाण मूर्तियों का वर्णन है। बृहत्संहिता[37] में कर–चरण वाले, छोटे एवं झुके हुये केशों से सुशोभित एवं पद्यासन मे बैठे प्रसन्न मूर्ति को बुद्ध का स्वरूप कहा गया है। अग्निपुराण[38] में बुद्ध को गौरवर्ण, लम्बे कान वालाा, वस्त्रों से सुशोभित तथा वरदमुद्रा में उर्ध्वपद्य पर बैठे हुये बतलाया गया है। बुद्ध मूर्ति का जन्म गन्धार में हुआ या मथुरा में यह विवादित है।[39] लेकिन यह स्पष्ट है कि सर्वप्रथम बुद्ध मूर्ति का अंकन कनिष्क के सिक्कों पर हुआ जिस पर ग्रीक अक्षरों में 'बोड्डो' शब्द उत्कीर्ण है।[40] मथुरा कला में निर्मित सारनाथ की बोधिसत्व मूर्ति[41], कौशाम्बी की बोधिसत्त्व मूर्ति[42] और कटरा (मथुरा) से प्राप्त बोधिसत्त्व की पद्मासन में बैठी मूर्ति के विद्वानों ने आरम्भिक मूर्तियों का उदाहरण माना है। ये मूर्तियाँ प्रतिमा लक्षणों के अनुसार बुद्ध की हैं, लेकिन उसकी चौकी पर उसे बोधिसत्व कहा गया है। शोध के अधीत क्षेत्र से इस तरह की एक अन्य मूर्ति अलीगढ़ जिले में लखनऊ नामक ग्राम से मिली है।[44] मूर्ति निर्माण के समय भिक्षु और शिल्पी दोनों के लिए यह विचारणीय रहा कि बोधिसत्व के किस स्वरूप को वस्त्र, अलंकार सहित या वस्त्र, अलंकार रहित रूप को अनुकृति किया जाय।

यह सर्वविदित है कि बुद्ध गृहत्याग के साथ ही राजकीय वस्त्रों को त्यागकर त्रिचीवर (संघाटी, अंतरवासक एवं उत्तरासंग) को धारण कर लिये थे। अतः सालंकार मूर्तियों को बोधिसत्त्व एवं निरलंकृत मूर्तियों को बुद्ध की मूर्ति माना जाय।[45]

कला के अन्तर्गत बुद्ध एवं बोधिसत्त्व की मूर्तियों दो रूपों में मिलती हैं –

1. स्थानक (खड़ी) मूर्ति,
2. आसन (बैठी) मूर्ति।

कलात्मक दृष्टि से खड़ी हुई मूर्तियों में यक्ष मूर्तियों का और बैठी हुई मूर्तियों मे ंयोगी और मुनियों की मुद्रा में बनायी गयी है। महापुरूष के रूप में बुद्ध के शरीर पर बत्तीस लक्षण माने जाते थे। इन लक्षणों से बुद्ध मूर्ति के निर्माण में सहायता ली गयी।[46] योगी के आदर्श स्वरूप से नासाग्र दृष्टि, ध्यानमुद्रा, पदमासन और चक्रवर्ती के आदर्श से दो चामरग्राही पार्श्वचर तथा छत्र आदि लक्षण अपनाये गये। मस्तक के पीछे दर्शाया गया प्रभावमण्डल प्रारम्भ से ही बुद्ध मूर्ति का लक्षण माना गया, जो ईरानी देवताओं के अनुकरण पर बनाया गया प्रतीत होता है।[47]

बुद्ध प्रतिमाओं का निर्माण विभिन्न मुद्राओं में किया गया :

तालिका 1

1.	अभय मुद्रा	:–	दहिने हाथ की हथेली, सामने की ओर खुली रखकर भक्त को अभय वचन देती मुद्रा को अभय मुद्रा कहते हैं।[48]
2.	वरद मुद्रा	:–	वरद प्रतिमाएँ खड़ी मुद्रा में पायी गई हैं जिसमें दहिने हाथ की हथेली नीचे की खुली रखकर वरदान देते हुये दिखाया गया है। बायें हाथ में संधाटी है।[49]
3.	भूमिस्पर्श मुद्रा	:–	पद्मासन मुद्रा में बैठे बुद्ध का बायां हाथ अंक (जाँघ) पर और दाहिना हाथ आसन पर नीचे पृथ्वी की ओर संकेत करते हुये प्रदर्शित किया गया है। इसका अभिप्राय बुद्धत्व प्राप्ति के बाद बुद्ध के मार पर जो विजय प्राप्त की थी, उसकी साक्षी पृथ्वी है। इस प्रकार की मूर्ति में कही–कही बोधिवृक्ष और पृथ्वी का भी अंकन मिलता है।[50]
4.	धर्मचक्र प्रवर्तन – मुद्रा	:–	इस मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमाा सर्वदा पद्यासन में रहती है। इसमें हाथों का भाव व्याख्यान – मुद्रा में होता है। दाहिने हाथ का अँगूठा और कनिष्ठका, बाएँ हाथ की माध्यमिका को स्पर्श करती हुई दिखायी जाती है।[51]
5.	ध्यानमुद्रा	:–	इस मुद्रा में पैरों की पलथी, दोनों हाथ नाभि के पास और हथेलियाँ एक – दूसरे पर रखी हुई होती है।[52] इस मुद्रा का प्रयोग जैन तथा ब्राह्मण मूर्तियों के अन्तर्गत भी हुआ है।

उक्त मुद्राओं के अतिरिक्त शयन या महानिर्वाण मुद्रा का भी प्रयोग हुआ है जिसमें बुद्ध को दो शालवृक्षों के बीच में लगी शैय्या पर दाहिना हाथ सिरहाने लेकर उसी करवट लेते हुए दिखाया गया है।[53]

सन्दर्भ

1. अग्रवाल वासुदेव शरण : भारतीय कला, प्रथिवी प्रकाशन, वाराणसी, 2010
2. अग्रवाल, पृथ्वीकुमार : प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007
3. उपाध्याय, वासुदेव : प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1982
4. पाण्डेय, जेव एन. : भारतीय कला, भाग – एक, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, 2008
5. चन्द्र, प्रमोद : द स्टोन स्कल्पचर इन द इलाहाबाद म्यूजियम् ए.आई.आई. एस. पब्लिकेशन नं0 2 पूना 1970
6. वाजपेयी, सन्तोष कुमार : गुप्तकालीन मूर्तिकला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन, दिल्ली, 1992
7. श्रीवास्तव, बृजभूषण : प्राचीन भारतीय प्रतिमा – विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007
8. जोशी, नीलकण्ठ पुरूषोत्तम : प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, विहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, 2000
9. भट्टाचार्या, बी0 : द इण्डियन बुद्धिष्ट आइकोनोग्राफी, कलकत्ता, 1968
10. घोष, अमलानन्द : एनॅ इनसाइक्लोपीडिया ऑव इण्डियन आर्कियोलॉजी, खण्ड – दो, नई दिल्ली, 1989
11. मितल, प्रभुदयाल : ब्रज की कलाओं का इतिहास, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1977
12. राजकीय संग्रहालय मथुरा एवं पुरातत्त्व संग्रहालयय लखनऊ के विविध मूर्ति संग्रह।